नीम एक : लाभ अनेक

- "ग्रामीण औषधालय" के नाम से पहचाना जाने वाला नीम एक सदाहरित पर्णपाती, 12 से18 मीटर ऊँचा एवं सभी प्रकार की मिट्टीयों में आसानी से उगने वाला वृक्ष है।
- यह राजस्थान, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आँध्र प्रदेश एवं गुजरात में मुख्यत: पाया जाता है। सड़कों के किनारे छायादार वृक्ष के रुप में इसे विशेष महत्व दिया जाता है।
- यह 400 मिमी से 1200 मिमी वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पनपता है किंतु उन क्षेत्रों में भी उग सकता है जहाँ वार्षिक वर्षा 400 मिमी से कम होती है। नीम शुष्क, अर्द्ध-शुष्क, ऊष्ण कटीबंधीय, अर्द्ध उष्ण कटीबंधीय क्षेत्रों में 22- 32 डिग्री सेल्सियस का औसत वार्षिक तापतान सहन कर सकता है। यह उच्च तापतान तो सहन कर सकता है किंतु 4 डिग्री सेल्सियस से कम तापमान नहीं सहन कर पाता। नीम की वृद्धि के लिए काली कपासी मृदा अति उपयोगी होती है।
- नीम में स्वत: स्थापित होने की क्षमता होती है। इसे सामान्यत: बीजों द्वारा उगाया जाता है परंतु जड़ या तने की कलम द्वारा भी उगाया जा सकता है। पौधशाला की क्यारियों में 15-20 सेमी की दूरी पर 1-1.5 सेमी की गहराई पर बीजों की बुवाई करके पानी दे दिया जाता है। बीज एक सप्ताह के अंदर अंकुरित हो जाते हैं। 5-6 सप्ताह के उपरांत पौध को क्यारियों से निकालकर पॉलीथीन की थैलियों में रोपित कर दिया जाता है।
- पुरानी पत्तियॉ फरवरी-मार्च में गिर जाती हैं एवं नई पत्तियॉ और फूल अप्रैल-मई में लगते हैं। फल जून-अगस्त में लगते हैं। फल छोटा, पीला तथा गोलाकार होता है जिसे निंबोली कहते हैं। निंबोली लगभग 11-50 किग्रा प्रति वृक्ष (औसतन: 20.5 किग्रा प्रति वृक्ष) लगती है। नीम के पेड़ से लगभग 4000 बीज/वृक्ष लगते हैं तथा बीजों में तेल की औसत मात्र 40 प्रतिशत होती है।
- नीम के तेल का उपयोग साबुन बनाने में एवं सौंदर्य-प्रसाधनों में करते हैं। बीजों से मिलने वाले तेल में कीटों को नष्ट करने का गुण होता है। मिट्टी के तेल में 2 प्रतिशत नीम का तेल मिलाकर प्रकाश के लिए प्रयोग करते हैं। नीम की खली का उपयोग खाद के रुप में करते हैं। इसके प्रयोग से मिट्टी में पोषक तत्वों की मात्र बढ़नें के साथ-साथ फफूँदी व अन्य रोगों तथा कीटों से भी बचाव होता है।
- इसकी पत्तियाँ पुल्टिस के रुप में घावों व फोड़ों पर लगाई जाती हैं इसके काढ़े का प्रयोग त्वचा रोगों में आराम देता है। छाया में सुखाई गई पत्तियों का प्रयोग अनाज, कपडों व कागज को कीटों से बचाने के लिए करते हैं। सूखी पत्तियों के धुँए का प्रयोग मक्खियों और मच्छरों को दूर भगाने के लिए करते हैं।
- नीम की कोंपलों को खाने से खून साफ होता है। इसकी कोमल टहनियों का उपयोग दाँतुन के रुप में करते हैं जो पायरिया और अन्य रोगों से बचाव करता है।
- नीम की लकड़ी अत्यंत मजबूत एवं टिकाऊ होती है। इसकी लकड़ी में दीमक (उदई) नहीं लगती और इसका उपयोग मकान, फर्नीचर व खेती के औजार बनाने में करते हैं।

संकलन:
श्रीमती संगीता त्रिपाठी
अकाष्ठ वनोपज प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005